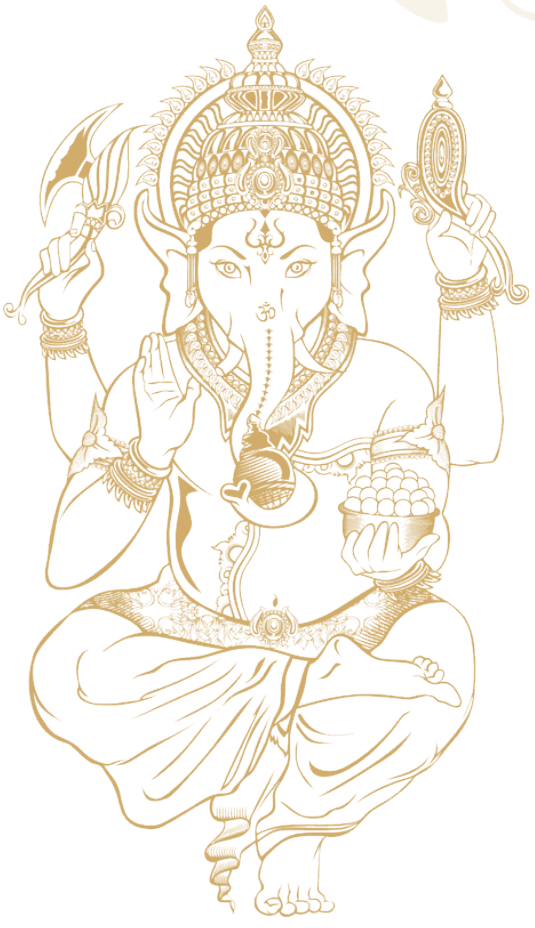

Jainik jain

Drishti jain

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120912114

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
10/12/1999	जन्म तिथि	05/07/2001
शुक्रवार	दिन	गुरुवार
घंटे 21:37:00	जन्म समय	17:41:00 घंटे
घटी 36:43:02	जन्म समय(घटी)	29:46:01 घटी
India	देश	India
Indore	स्थान	Indore
22:42:00 उत्तर	अक्षांश	22:42:00 उत्तर
75:54:00 पूर्व	रेखांश	75:54:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:24	स्थानिक संस्कार	-00:26:24 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:55:47	सूर्योदय	05:46:35
17:42:14	सूर्यास्त	19:15:09
23:51:08	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:25

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 4वर्ष 3मा 1दि		17:45:58	कर्क	लग्न	वृश्चि	28:39:12	शुक्र 12वर्ष 6मा 11दि	
मंगल		24:17:41	वृश्चि	सूर्य	मिथु	19:39:36	चन्द्र	
12/03/2020		23:49:53	धनु	चंद्र	धनु	18:18:45	16/01/2020	
13/03/2027		17:12:12	मक	मंगल व	वृश्चि	22:40:33	15/01/2030	
मंगल	08/08/2020	05:34:38	वृश्चि	बुध	वृष	29:31:49	चन्द्र	15/11/2020
राहु	26/08/2021	01:19:49	मेष व	गुरु	मिथु	04:26:48	मंगल	16/06/2021
गुरु	02/08/2022	11:40:13	तुला	शुक्र	वृष	05:55:16	राहु	16/12/2022
शनि	11/09/2023	17:23:06	मेष व	शनि	वृष	15:35:51	गुरु	16/04/2024
बुध	07/09/2024	10:33:48	कर्क व	राहु व	मिथु	12:31:05	शनि	15/11/2025
केतु	04/02/2025	10:33:48	मक व	केतु व	धनु	12:31:05	बुध	17/04/2027
शुक्र	06/04/2026	19:58:46	मक	हर्ष व	कुंभ	00:26:35	केतु	16/11/2027
सूर्य	11/08/2026	08:37:38	मक	नेप व	मक	14:09:34	शुक्र	17/07/2029
चन्द्र	13/03/2027	16:47:19	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	19:15:42	सूर्य	15/01/2030

लग्न-चलित

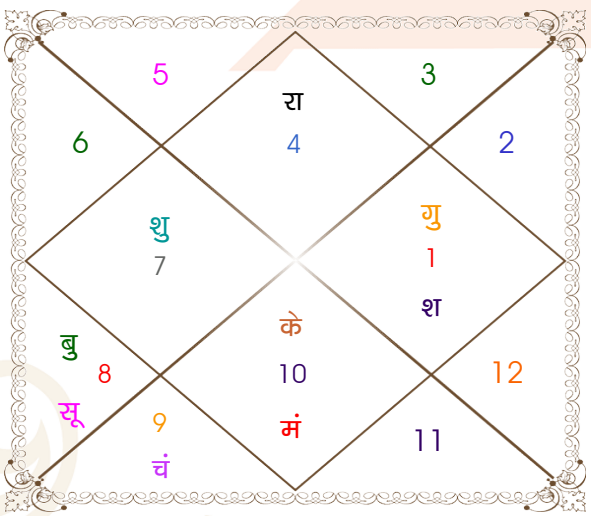

लग्न-चलित

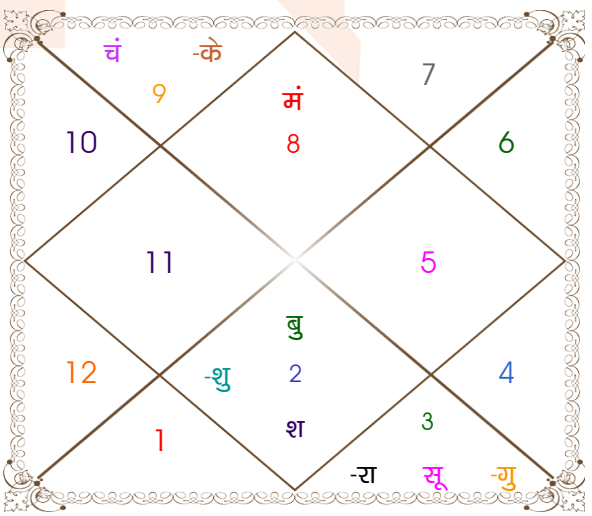

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	वानर	वानर	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	गुरु	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	धनु	धनु	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	28.00		

Jainik jain का वर्ग श्वान है तथा Drishti jain का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Jainik jain और Drishti jain का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Jainik jain मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में सप्तम भाव में मकर राशि में तथा अष्टम भाव में मीन राशि में मंगल हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Jainik jain कि कुण्डली में सप्तम् भाव में मकर राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल Jainik jain कि कुण्डली में उच्च का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Drishti jain मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल Drishti jain कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि Drishti jain कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु Jainik jain कि कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Jainik jain तथा Drishti jain में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।